U.G. I (Hon's) Paper - II

Topic - Philosophy of Nature

प्रश्न = दर्शन के स्वरूप की विवेचना करें? क्या दर्शनशास्त्र के सामाजिक परिवेश में प्रासंगिक है? इसका संस्कृति से क्या संबंध है।

अथवा

दर्शन को परिभाषित करें? दर्शन जीवन एवं चिन्तन से किस प्रकार संबंधित है? व्याख्या करें?

अथवा

दर्शन की प्रकृति एवं जीवन के साथ समन्वय की समीक्षात्मक मूल्यांकन करें

उत्तर - ~~पाश्चात्य दर्शन~~

पाश्चात्य अर्थ में दर्शन, ज्ञान से प्रेम है। मनुष्य स्वभावतः एक विवेकशील प्राणी है। चिंतन करना उसका स्वभाव है। वह अपने समक्ष घटित होने वाली प्राकृतिक एवं अन्य घटनाओं के सम्बन्ध में चिंतन करता है, और घटनाओं के कारण को ज्ञान प्राप्त करना चाहता है। इन्ही घटनाओं के आधार पर वह "जीवन का लक्ष्य क्या है"? इन प्रश्नों का उत्तर जानना चाहता है। वह विश्व की उत्पत्ति का कारण जानना चाहता है। पुनः जो भी विश्व का कारण है, उसका ज्ञान कौन से साधन से हो। उचित क्या है? सही तर्क प्रक्रिया क्या है? इन सब प्रश्नों से ही दर्शन का संबंध है। दर्शन एक वैचारिक कला है, विचार की अनवरत प्रक्रिया है। विज्ञान के समान यह अनुसंधानों और प्रयोगों द्वारा निष्कर्ष की स्थापना करने से संबंधित नहीं है इसकी दृष्टि सम्पूर्णता की है अथवा यह समष्टिगत दृष्टिकोण रखता है। विज्ञान विश्व को खण्डों में बाँट कर अध्ययन करता है। जैसे जीव जगत, भौतिक जगत, रसायनिक पदार्थ आदि। इससे संबंधित विज्ञान की अलग-अलग शाखायें हो जाती है

दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा जाता है कि दर्शन विश्व को उसकी संपूर्णता में जानने का बौद्धिक प्रयास है।

यह निष्पक्ष बौद्धिक चिन्तन प्रक्रिया है, जो जीवन के किसी भी क्षेत्र पर लागू किया जा सकता है। परन्तु जीवन के किसी भी क्षेत्र के अध्ययन में यह समष्टिगत दृष्टिकोण अपनाता है। कहा जाता है कि जब तक विचार प्रक्रिया प्रारंभ रहती है, तो ऐसी प्रक्रिया दर्शन का अंग होती है, परन्तु जैसे ही दर्शन किसी निष्कर्ष पर पहुँचता है वह किसी न किसी विज्ञान का अंग हो जाता है। इसी कारण तो कहा जाता है कि दर्शन सभी विज्ञानों की माता है।

Scanned with CamScanner

प्रकृति :- इस प्रकार दर्शन की प्रकृति सदैव निष्पक्ष एवं बौद्धिक एवं संश्लेषणात्मक अथवा समष्टिगत अथवा विषय को सम्पूर्णता में देखने की होती है।

क्षेत्र :- जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर उपरोक्त वर्णित दृष्टि से देखने के कारण इसकी कई शाखाएँ हैं जैसे - तत्वमीमांसा, विश्व के अन्तिम अथवा मूल कारण को जानने से संबंधित है, ज्ञान की मीमांसा, कारण का ज्ञान किन साधनों से हो और ज्ञान की प्रमाणिकता का आधार क्या हो, से संबंधित है। नीति दर्शन का संबंध उचित अनुचित से है, तर्कशास्त्र का संबंध, एक ही वैज्ञानिक अनुमान प्रक्रिया से है। विज्ञान दर्शन का संबंध, सम्प्रत्ययों (concepts) के अर्थ के स्पष्टीकरण से है धर्म दर्शन का संबंध धार्मिक सम्प्रत्ययों के अर्थ निर्धारण से है। इत्यादि

कुल मिलाकर दर्शन एक विशेष दृष्टिकोण है जिसे जीवन के हर क्षेत्र पर लागू किया जा सकता है। इसी कारण विलियम जेम्स कहते हैं "दर्शनशास्त्र स्पष्ट रूप से विचार करने का असाधारण एवं आग्रहपूर्ण प्रयत्न है।"

रसेल भी कहते हैं "दर्शन की उत्पत्ति सत्य की खोज के लिए किए गए असाधारण रूप से आग्रहपूर्ण प्रयत्न है।"

इस प्रकार दर्शन की प्रकृति निष्पक्ष, बौद्धिक एवं समष्टिगत ज्ञान प्राप्त करने की है। यह जीवन के सभी क्षेत्र पर लागू हो सकता है। अतः यह एक विशेष समग्र दृष्टिकोण है।

भारतीय अर्थ में दर्शन तत्व साक्षात्कार अर्थात तत्व ज्ञान है जिससे हमें जन्म मरण के बंधन से छुटकारा और दुःखों से मुक्ति मिलती है। परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दर्शन भौतिक जगत के सम्बन्ध में जानने का प्रयास नहीं करता है। वास्तव में यह आध्यात्म की ओर जाने पूर्व व्यवहार जगत, जिसे अविद्यावश देखना पड़ता है का अध्ययन बौद्धिक (साधारण) एवं तात्विक दृष्टि से अनिवार्य मानता है। इस अर्थ में यह पाश्चात्य दर्शन से कहीं श्रेष्ठ है। कारण, सामान्य बौद्धिक एवं ~~नार्किक~~ तार्किक दृष्टि से अनिवार्य मानता है। ~~इस अर्थ में यह पाश्चात्य दर्शन से कहीं श्रेष्ठ है। कारण सामान्य बौद्धिक एवं तार्किक दृष्टि को~~ दर्शन का भौतिक जगत तक ही सीमित पर्याप्त मानने के कारण पाश्चात्य दर्शन रह जाता है, वहीं भारतीय दर्शन भौतिक जगत के निष्पक्ष बौद्धिक

अथवा तार्किक ज्ञान के उपरांत आध्यात्म की ओर ~~प्रस्थान~~ प्रस्थान कर जाता है।

यही दर्शन का दोनों दृष्टियों से स्वरूप है

नोट :- पाश्चात्य दृष्टि से दर्शन जिज्ञासा के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होता है परन्तु भारतीय दृष्टि से दर्शन मोक्ष (दुःखों से छुटकारा) की आकांक्षा से उत्पन्न।

दर्शन का मानव जीवन से सम्बन्ध एवं वर्तमान सामाजिक परिवेश में इसकी सार्थकता :-

दर्शन का जीवन से गहरा सम्बन्ध है। चूँकि दर्शन विचार प्रक्रिया है; अतः जीवन के सम्बन्ध में भी विचार दर्शन के अंतर्गत ही आते हैं। सभी व्यक्ति चाहे वह ज्ञानी हो अथवा मूर्ख, उसका कोई न कोई जीवन दर्शन अवश्य होता है। ज्ञानियों का दर्शन उच्च श्रेणी का और मूर्खों का दर्शन निम्न श्रेणी का हो सकता है। किसान का दर्शन "भोजन वस्त्र एवं आवास की समस्या" का निदान हो सकता है तो शंकराचार्य का दर्शन "तत्व साक्षात्कार"। विभिन्न दर्शन रखने वाले व्यक्तियों की जीवन शैली भिन्न भिन्न होती है। पूर्ण भौतिकवाद में विश्वास करने वाला व्यक्ति जीवन के हर क्षण में मौज-मस्ती पसंद करता है। अध्यात्मवाद के दर्शन को मानने वाला व्यक्ति समाज और राष्ट्र कल्याण के पूर्व अपना कल्याण चाहता है। उपयोगितावादी दर्शन एवं अध्यात्मवादी दर्शन में विश्वास करने वाला व्यक्ति दया, करुणा, समस्याओं में संलग्न रहकर पूरे समाज, राष्ट्र, यहाँ तक कि सम्पूर्ण मानवता के कल्याण को अपने जीवन का लक्ष्य मानता है। अतः मानव जीवन एवं उसके दर्शन से प्रभावित होता है। इस प्रकार दोनों में संबंध सिद्ध है सार्थकता भी सिद्ध है।

समीक्षा — कुछ विचारकों के अनुसार अथवा कुछ उदाहरणों में ऐसा सिद्ध नहीं होता है कि जीवन का दर्शन से सीधा संबंध है। उदाहरण के लिए कुछ व्यक्ति बात तो आध्यात्म की करते हैं और शंकराचार्य के अध्यात्मवाद को श्रेष्ठ दर्शन मानते हैं परन्तु व्यवहार एवं भौतिक सुखों के भोग के लिए लालायित रहते हैं यहाँ ऐसे व्यक्तियों के सन्दर्भ में जीवन का दर्शन से संबंध होना असिद्ध हो जाता है।

परन्तु यह असिद्धि भ्रमात्मक है। शंकराचार्य के अध्यात्मवाद की प्रवंचना करने वाला व्यक्ति यदि भोगी

अथवा भौतिक सुखों की ओर भागता है, तो वास्तव में उस का जीवन दर्शन भौतिकवाद ही है, अथवा चार्वाक का दर्शन ही है जिसे उसे मन से अपनाया है। अतः जीवन के दर्शन से सम्बंध सिद्ध होता है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में इसकी सार्थकता :-

दर्शन की सार्थकता, वर्तमान तो क्या अतीत के सामाजिक परिवेश में भी रही है और भविष्य के सामाजिक परिवेश में भी रहेगी। कारण जीवन से उसका सीधा सम्बन्ध है चूँकि प्रत्येक व्यक्ति का अपना जीवन दर्शन होता है, जिसे वह मन से अपनाता है और उसकी अनुरूप कार्य करता है दूसरे शब्दों में व्यक्ति के विचारों (दर्शनों) के अनुकूल ही आचरण होता है।

वर्तमान सामाजिक परिवेश में व्यक्ति का जीवन दर्शन मूलतः भौतिकवाद हो गया है जो अपने अंतर्गत (उपभोगतावाद और आर्थिक उन्नतिवाद) को समावेश कर रहा है। आज व्यक्तियों का चरम पुरुषार्थ, अर्थ और लाभ हो चुकी है। भावनायें समाप्त होती जा रही है। मानवीय मूल्यों का अंत होता जा रहा है। स्वार्थ सुख के लिए हत्या, लूट, रक्तपात समाज में बढ़ रहे हैं।

ऐसी परिस्थिति में आध्यात्मवादी दर्शन या कम से कम उपयोगितावादी दर्शन (अधिकतम व्यक्तियों का अधिकतम सुख) जैसे दर्शन की प्रत्या(ख्या) की आवश्यकता आ पड़ी है। यही कारण है कि "पर्यावरण दर्शन", चिकित्सा सम्बन्धी नैतिकता आदि की भिन्न विभिन्न तकनीकी साधनों में की जा रही है। क्योंकि 'स्वार्थवादी दर्शन' को अपनाने के कारण, पर्यावरण एवं चिकित्सा जगत भी प्रभावित हो रहा है अतः वर्तमान सामाजिक परिवेश में दर्शन विशेषकर आध्यात्मिक तथा लोक कल्याण पर आधारित दर्शन और भी उपयोगी एवं प्रासंगिक है।

दर्शन का संस्कृति से सम्बन्ध :- दर्शन का संस्कृति से सीधा सम्बन्ध है। संस्कृति वास्तव में समाज के जीवन के सम्बन्ध में सोच प्रक्रिया से संबंधित है और जिसका बौद्धिक चिंतन ही एक कला है। अतः संस्कृति का दर्शन से सीधा सम्बन्ध है। संस्कृति में जीवन के छोटे-छोटे पहलुओं पर भी विचार किया जाता है। और - खुली काम प्रवृति अथवा

सार्वजनिक धाम प्रदर्शन जो भारतीय संस्कृति में प्रबंध है,
परन्तु दर्शन का जीवन के संबंध में समष्टिगत दृष्टिकोण होता
है। सम्पूर्णरूप में जीवन अथवा समग्र रूप में जीवन क्या है?
इस प्रश्न से दर्शन का संबंध होता है परन्तु ऐसा भी नहीं है कि
संस्कृति का जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण नहीं होता। संस्कृति
में जीवन के छोटे छोटे पहलुओं के साथ-साथ समग्र दृष्टिकोण
भी अपनाया जाता है। परन्तु संस्कृति में विचार प्रक्रिया में
तार्किकता हो या विश्लेषण बौद्धिकता हो, यह अनिवार्य नहीं। पर दर्शन
में ऐसा है। दर्शन सांस्कृतिक मूल्यों को भी विचार के लिए विषय
बनता है।

Dr. Saroj Ram
Dept. of Philosophy
D. K. College, Dumraon